प्रथम अध्याय

— मन्नू भण्डारी व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सामान्य परिचय —

मन्नू मण्डारी व्यक्तित्व एवं कृतित्व --

नये युग की उपन्यासकारों में मन्नू मण्डारी का अपना अलग ही स्थान है। मन्नू मण्डारी का साहित्य,उपन्यास,कहानी एवं नाटक इन तीन विधाओं से परिपूर्ण है। मन्नूजी का समग्र साहित्य उनके सीधे-सादे और सच्चे व्यक्तित्व का आईना है। पाठक वर्ग उनके साहित्यिक पात्रों से, एकाकार हो जाता है और अपनी अनुभूतियाँ उन पात्रों में ढूँढने लगता है।

तेजस्वी विचार,रूढियुक्त साहस और घरेलू आत्मीयता की सहजता ही मन्नू की सबसे बडी शक्ति है। उनके उपन्यास और कहानियाँ बेहद सहज और सीधे पाठक तक पहुँचनेवाले है। साहित्य के हर क्षेत्र में उनकी चर्चा हुई है। मन्नूजी के उपन्यास जीवन से जुडे हुए है। उनके उपन्यासों में पारिवारिक जीवन,पति-पत्नी के बनते - बिगडते सम्बन्ध एवं उन्मुक्त प्रेम, राजनीतिक नेता लोगों के समाजपर अत्याचार एवं उनका समाज में स्थान आदि का चित्रण सूक्ष्मतासे हुआ है।

श्रीमती मन्नू मैंडारी हिन्दी साहित्य में कहानी लेखिका के रूप में ही विशेष नाम,स्थान और महत्व अर्जित कर सकी। नाटक और उपन्यास के क्षेत्र में इन्होंने बाद में प्रवेश किया। इनके कहानी-संग्रह और उपन्यास प्रकाशित होकर आज हिन्दी साहित्य की शोभा बढा रहे हैं। इनका जीवन परिचय प्रस्तुत है --

जन्म --

मन्नू मण्डारी का जन्म ३ अप्रैल १९३१ को मध्यप्रदेश में स्थित मानपुरा नामक एक छोटेसे गाँव में हुआ।

पिता --

मन्नूजी के पिता का नाम श्री सुखसंपतराय मण्डारी था। उनका संयुक्त मारवाडी परिवार था। श्री सुखसंपतराय हिन्दी पारिभाषिक शब्दकोश के आदि निर्माता थे। मन्नूजी के व्यक्तित्व निर्माण का श्रेय उनके पिताजी को है। उनके पिता क्रोधी,अहंवादी एवं आदर्शवादी थे। उन्होंने जीवन के कई दिन आर्थिक तंगी

मैं बिताये लेकिन कभी किसी से कोई सहायता नहीं ली । सुखसंपतराय देशप्रेमी थे । इसी कारण उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित लोगों की काफी सहायता की । मन्नूजी के पिता अपने समय के समाज - सुधारक थे । अत: उनके लड़कों की तरह उनकी लड़कियों को भी शिक्षा प्राप्त हो सकी ।

श्री सुखसंपतराय ने अपनी लड़कियों को शिक्षा दी, उन्हे राजनीति में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित किया तथा उन्हे कभी भी रसोई घर में जाने नहीं दिया आज इसी कारण मन्नूजी साहित्य जगत में इतनी ऊँचाई पर पहुँच पायी है ।

श्री सुखसंपतराय की मृत्यु कैन्सर से हुई । उनका देशप्रेम अंत समय तक बना रहा । परिवारवालों से बढकर उन्हे देश की चिन्ता अधिक थी । मन्नूजी का राजेन्द्रजी से विवाह रचाना शायद उन्हे उचित नहीं लगा और इसी कारण वे अंतिम समय तक अपने दामाद राजेन्द्रजी से मिले नहीं ।

मन्नूजी ने ' मैं हार गई ' यह अपना प्रथम कहानी संग्रह पिताजी को अर्पित करते हुये लिखा है --

" जिन्होंने मेरी किसी भी इच्छापर
कभी अंकुश नहीं लगाया
पिताजीको ।"[१]

मन्नूजी की अपने पिता के प्रति नितांत श्रद्धा स्पष्ट होती है ।

माता --

मन्नू जी की माता का नाम अनूपकुंवरि था । वह अनपढ थीं । वह अनपढ होने के बावजूद भी पति की किताबें बाँधना, पारसल की व्यवस्था करना आदि काम करती थी । वह साक्षात स्नेह की मूर्ति थी । उन्होंने मन्नू के अंतर्जातीय विवाह का विरोध नहीं किया ।

---

१ भण्डारी मन्नू - ' मैं हार गई ' - अर्पण ।

भाई-बहन --

मन्नू जी के भाई - बहनों की संख्या चार है। उनके दो भाई और दो बहनें हैं। मन्नू जी के बडे भाई का नाम प्रसन्नकुमार है और दूसरे भाई का नाम वसंतकुमार है। दोनों भाईयों ने अंग्रेजी में एम.ए.किया और अब नौकरी करते हैं। मन्नू जी की बडी बहन का नाम है स्नेहलता नवरत्नमल बोर्डिया और छोटी बहन का नाम है सुशीला पराक्रमसिंह मण्डारी। दोनों बहनों की शिक्षा बी.ए.तक हुई है। स्नेहलता आजकल इंदौर में रहती है तथा सुशीला कलकत्ता में एक स्कूल चला रही है।

महेन्द्रकुमारी से मन्नू मंडारी तक --

मन्नू मण्डारी का पूरा नाम महेंद्रकुमारी हैं। वे सबसे छोटी होने के कारण सभी उन्हे प्यार से ` मन्नू ` पुकारते थे। राजेन्द्र यादव से विवाह होने के पश्चात भी वे मन्नू मण्डारी ही रही।

शिक्षा एवं साहित्य में पदार्पण --

स्वातंत्र्यपूर्वकाल में शिक्षा का प्रसार विशिष्ट वर्गतक सीमित था। इस काल में नारी शिक्षा एक अकल्पित बात लगती थी। मन्नू के पिता अपने समय के समाज सुधारक थे। इसी कारण इस काल में मन्नू तथा उनकी बहनों को शिक्षा प्राप्त हुई। मन्नू जी ने अजमेर के ` सावित्री गर्ल्स हाई स्कूल ` से मैट्रिक किया तथा अजमेर के कॉलेज से इंटर किया। कॉलेज में मन्नू जी अपने प्राध्यापिकाओं के उपदेशों के कारण देशप्रेम से प्रभावित हुई। उनके देशप्रेम के बारेमें अनिता राजुरकरजी ने अपनी पुस्तक में कहा है कि, --

" उनके हृदय में स्वतंत्रता की ऐसी ज्वाला भडकी कि वे रोज सुबह होते ही जुलूस निकालतीं, नारे लगाती और धुआंधार भाषण देती।" [१]

मन्नू जी ने कलकत्ता से बी.ए. किया जब कि बी.ए.में उनका हिन्दी विषय नहीं था। इसलिए हिन्दी विषय लेकर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से उन्होंने एम.ए.किया।

---

१ राजूरकर अनीता - कथाकार मन्नू मण्डारी - पृ.५।

मन्नू जी को लेखन संस्कार विरासत में मिला । पिता श्री सुखसंपतरायजी हिन्दी पारिभाषिक शब्दकोश के आदि निर्माता रह चुके थे । उन्ही के कारण मन्नू जी का व्यक्तित्व निर्माण हुआ । ' मैं हार गई ' इस कहानी द्वारा मन्नू का साहित्य जगत में आगमन हुआ । ' कहानी ' पत्रिका के संपादक श्री भैरवप्रसाद गुप्तजी ने उनकी यह कहानी छपवाकर उन्हे प्रेरित किया । पाठकों के प्रशंसनीय पत्रों के कारण मन्नूजी साहित्य क्षेत्र में आगे बढती ही गयी ।

अध्यापकीय जीवन --

मन्नू जी ने कलकत्ता में ' बालीगंज शिक्षा सदन ' स्कूल में अध्यापन का कार्य किया । सन १९६१ में मन्नू जी अध्यापिका से प्राध्यापिका बनी । उन्होंने कलकत्ता में रानी बिडला कॉलेज में अध्यापन का कार्य किया और अब वे दिल्ली के प्रसिद्ध कॉलेज ' मिरांडा हाऊस ' में अध्यापन का कार्य कर रही है ।

विवाह --

मन्नू जी कलकत्ता के एक स्कूल में अध्यापन का कार्य कर रही थी । उन्हीं दिनों उनका परिचय राजेन्द्र यादवजी से हुआ । स्वभावगत साम्यता होने के कारण उन दोनों में घनिष्ठता हो गयी । उन दिनों राजेन्द्रजी साहित्य - क्षेत्र में पूरी तरह जम गये थे और उसी समय मन्नू जी ने लेखन क्षेत्र में पहला कदम रखा था । उक्त परिचय घनिष्टता में परिवर्तित हो गया और दोनों के हृदय में प्रणय भावना पल्लवित होने लगी तथा सन १९५९ में कलकत्ता में दोनों का विवाह हो गया । मन्नू जी ने सन १९६१ के लगभग कलकत्ता में एक पुत्री को जन्म दिया । जिसका नाम ' रचना ' है लेकिन प्यार से उसे ' टिंकू ' पुकारते है । मन्नू जी उसे अपना मित्र मानती है ।

पारिवारिक जीवन --

मन्नू जी और राजेन्द्र जी कलकत्ता छोडकर दिल्ली चले गये । दिल्ली में राजेन्द्रजी ने अपने मित्रों की सहायतासे ' अक्षर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड ' नामक प्रकाशन संस्था की स्थापना की ।

मन्नू जी और राजेन्द्रजी साहित्य क्षेत्र में अपने अपने स्थान पर विराजमान थे। लेकिन प्रत्येक व्यक्ति को सुख ही सुख नसीब नहीं होता। उस सुख के साथ दु:ख का भी आगमन होता है। उनसे जलनेवाले लोगोंने उनके संबंध के बारे में झूठी अफवाहें फैलायी। एक ओर राजेन्द्रजी के हितचिंतक उन्हें 'मिस्टर मन्नू भण्डारी' कहने लगे तो दूसरी ओर मन्नू जी की कहानियाँ 'स्वानुभूतियों की कहानियाँ' कही जाने लगी। अनेक अफवाहें फैलायी गयी लेकिन उन दोनों में तनाव या विच्छेद की स्थिति कभी नहीं आयी। इस संदर्भ में प्रा.किशोर गिरडकरजी ने लिखा है कि,

'घोर प्रतिकूल स्थिति में लोगों के किसी भी आरोप-प्रत्यारोप से विचलित न होते हुये मन्नू जी ने सौम्य और समझौतावादी पत्नी की भूमिका निभाकर अपना पारिवारिक जीवन सुचारु रूप से अग्रसर रखा, वह नि:संदेह प्रशंसनीय है।'[१] इसी तरह नन्दिनी मिश्र ने उनके वैवाहिक जीवन के सम्बन्ध में लिखा है --

'यद्यपि कुछ लोगों ने श्री राजेन्द्र यादव और श्रीमती मन्नू भण्डारी के वैवाहिक जीवन के संबंध में अनेक प्रकार की मिथ्या बातों का प्रचार कर दोनों के विवाह विच्छेद की कल्पनाएँ भी कर डाली परंतु उक्त धारणाएँ शीघ्र ही निर्मूल सिद्ध हुई तथा उनका दाम्पत्य जीवन विवाह के लगभग तेईस वर्षों बाद आज भी पूर्णतया सुखमय, सामान्य एवं स्थिर है। साथ ही श्रीमती मन्नू भण्डारी के सुखमय पारिवारिक जीवन की एक अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि उनके लेखन कार्य से संबंधित है और उनके लेखन कार्य में किसी प्रकार की शिथिलता नहीं आई तथा उन्हें निरंतर प्रसिध्दि प्राप्त होती रही।'[२]

मन्नू जी के व्यक्तित्व निर्माण में कुछ हद तक पिता का सहयोग रहा। मन्नू जी को बचपन में राजनीतिक चर्चाओं में सहभागी होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उनके पिता जितने अहंवादी एवं आदर्शवादी थे, उनके विपरित मन्नूजी की माता उदार तथा स्नेहल थी। माता-पिता के इस परस्पर विपरित स्वभाव के कारण मन्नू जी का व्यक्तित्व निर्माण हुआ।

---

१ गिरडकर किशोर - मन्नू भण्डारी का कथा साहित्य - पृ.६-७

२ मिश्र नंदिनी - मन्नू भण्डारी का उपन्यास साहित्य - पृ.१०-११।

नारी अपने जीवन में माँ, बेटी, बहन, पत्नी आदि भूमिकाएँ निभाती है। मन्नू जी ने यह भूमिकाएँ अच्छी तरह से निभायी है। इन्ही भूमिकाओं के साथ मन्नू जी लेखिका तथा अध्यापिका की भी भूमिका निभा रही है।

मन्नू भण्डारी की लोकप्रियता --

मन्नू जी का साहित्य लोकप्रिय तथा श्रेष्ठ सिद्ध हुआ है। साहित्यकार के रूप में उन्हे सम्मानित कर उनकी कई रचनाओं को पुरस्कार मिल चुका है। मन्नू जी की कई कहानियों का अनुवाद गुजराती, मराठी, कन्नड, मल्यालम, तेलगु, सिंधी, बंगला, डच तथा अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषाओं में हुआ है।

मन्नूजी का प्रसिद्ध उपन्यास ` आपका बंटी ` गुजराती, मराठी और अंग्रेजी आदि भाषाओं में अनुवादित हो चुका है। इस उपन्यास का अनुवाद गुजराती भाषा में निरंजन सट्टावालाने किया है। मराठी भाषा में इंदुमती शेवडे ने तथा अंग्रेजी में जयरतनजी ने इस उपन्यास का अनुवाद किया है। यही मन्नू भण्डारी की लोकप्रियता का पहला प्रमाण है।

मन्नू जी का बहुचर्चित राजनीतिक उपन्यास ` महाभोज ` मराठी भाषा में अनुवादित हुआ है। इस उपन्यास का मराठी भाषा में अनुवाद डॉ. पद्माकर जोशी ने किया है। इस उपन्यास का नाटयरूपांतर भी हुआ है।

मन्नू जी की कहानियों पर फिल्मे भी बनी है। ` एखाने आकाश नाई ` इस कहानी को लेकर बासु चटर्जीने ` जीना यहाँ ` फिल्म बनायी। प्रेम संबंध के दोराहे पर खडी युवती की प्रेमगाथा लिये हुये उनकी कहानी ` यही सच है ` पर ` रजनी गंधा ` नामक फिल्म बनी। ` स्वामी ` फिल्म की पटकथा भी उन्होंने लिखी। ` आपका बंटी ` उपन्यास पर आधारित फिल्म ` समय की धारा ` इस फिल्म की पटकथा भी मन्नू जी ने लिखी। अत: स्पष्ट है कि श्रीमती मन्नू भण्डारी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार है और उन्होंने कहानी, उपन्यास एवं नाटक आदि विविध साहित्य रूपों की समृध्दि में अपना महत्वपूर्ण योग प्रदान किया है।

कृतित्व --

श्रीमती मन्नू मण्डारी ने अपनी रचना प्रक्रिया के सम्बन्ध में 'पांचजन्य' नामक पत्र में लिखा है --

"मेरे लिये लिखना दो तरह का होता है। एक वह जो मैं कलम लेकर कागज पर लिखती हूँ और जो काफी लम्बे अन्तराल के बाद ही संभव हो पाता है। दूसरा वह जो बिना कागज कलम के दैनंदिन कामों के साथ-साथ बैकग्राउंड म्युजिक की तरह मन की परतों पर निरंतर ही चलता रहता है। बाहर वालों के लिए महत्वपूर्ण वह है जो कागज पर लिखा गया और उन तक पहुँच गया। लेकिन मेरे लिये तो 'मेरा मानसिक लेखन' ही महत्वपूर्ण है।" [१]

राजेन्द्रजी यादव इस संदर्भ में लिखते है कि, --

"मन्नू की जिन बातों को मैं बहुत इज्जत करता हूँ उनमें उसके लिखने का तरीका। खाने के मेज पर बैठकर, रसोई में उचित आदेश देती हुई, टिंकू को खेल में लगाकर पास बैठी हुई, घर की सारी व्यवस्था देखती हुई वह कहानी लिखती रहती है।.... वैसे सौंझ को नहा-धोकर एकदम धोबी के धूले सफेद कपडे पहन कर, बहुत अधिक चुनेवाला पान खाते हुये लिखना उसे सबसे अधिक प्रिय है।" [२]

मन्नू जी किसी भी पात्र एवं घटना से इतनी एकाकार हो जाती है कि उनका प्रकटीकरण कहानी का रूप धारण कर लेता है, मन्नू जी की कहानियाँ पाठक के अंतर्मन को छुकर संवेदना को सहज ही जागृत कर देती है। मन्नू जी की कहानियों की यही प्रमुख विशेषता हैं।

कहानीकार मन्नू मण्डारी --

श्रीमती मन्नू मण्डारी का हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में सबसे पहला प्रवेश - प्रतिष्ठा का यही रूप है। आज भी अधिक मान्यता उन्हे एक कहानीकार के रूप में

---

१ राजूरकर अनीता - कथाकार मन्नू मण्डारी - पृ.१३।

२ यादव राजेन्द्र - औरों के बहाने - पृ.६५।

ही प्राप्त है। यह बात निस्संकोच रूप से कही जा सकती है। हिन्दी की लब्ध-प्रतिष्ठा पत्र-पत्रिकाओं में तो इनकी कहानियाँ समय-समय पर प्रकाशित होती रहीं और आज भी होती रहती हैं, अभी तक यह कई श्रेष्ठ कहानी - संकलन भी हिन्दी-साहित्य और कहानी के पाठकों को प्रदान कर चुकी हैं। उनके प्रमुख कहानी संकलनों के नाम हैं क्रमशः त्रिशंकु, यही सच है, एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, आँखों देखा झूठ, आस माता तथा अन्य। इनकी कहानी कला के बारे में, इनके व्यक्तित्व का आकलन करते हुए कहा जाता है कि मन्नू भण्डारी आज भी हिन्दी कहानी में एक ऐसा विशिष्ट नाम है, जिन्होंने कहानी को नई दिशा दी। उन्होंने मस्ती, भावुकता भरी कहानियाँ नहीं, जिन्दगी को सीधे समझने और जाँचने वाली बेबाक और साहसी कहानियाँ लिखी है - रोचक और पठनीय। उन्होंने आधुनिकता को फैशन के रूप में नहीं, हमारी अपनी बदलती परिस्थितियों के सन्दर्भ में ग्रहण किया है।

मन्नू भण्डारी के प्रकाशित कहानी संग्रह --

कहानी संग्रह		प्रथम संस्करण --
१. मैं हार गई	-	सन १९५७ इ.
२. तीन निगाहों की एक तस्वीर	-	सन १९५९ इ.
३. यही सच है	-	सन १९६६ इ.
४. एक प्लेट सैलाब	-	सन १९६८ इ.
५. त्रिशंकु	-	सन १९७८ इ.

१. मैं हार गई --

मन्नू भण्डारी का यह पहला कहानी संग्रह सन १९५७ में प्रकाशित हुआ। 'मैं हार गई' कहानी सर्वप्रथम 'कहानी' पत्रिका में प्रकाशित हुई। यह कहानी इस संग्रह की अंतीम कहानी है तथा इसी कहानी के अधार पर कहानी संग्रह का नामकरण हुआ है। इस संग्रह में १२ कहानियाँ संग्रहित है।

इस कहानी संग्रह की अधिकतर कहानियाँ जैसे 'गीत का चुंबन', 'एक कमजोर

लड़की`,` कील और कसक`,` दीवार, बच्चे और बरसात` आदि कहानियों में नारी मन की अनुभूतियाँ अभिव्यक्त हुई हैं।` मैं हार गई ` इस एक मात्र कहानी द्वारा आज के राजनीतिज्ञों पर तीखा व्यंग्य किया गया है।

२. तीन निगाहों की एक तस्वीर --

मन्नू जी का यह दूसरा कहानी संग्रह सन १९५९ में प्रकाशित हुआ। इस कहानी संग्रह में कुल आठ कहानियाँ संगृहीत है।

` मैं हार गयी` कहानी संग्रह की तुलना में` तीन निगाहों की एक तस्वीर` और` चश्मे ` कहानियों में एक नयापन है।` अकेली ` और` मजबूरी` कहानियाँ एक जैसी ही है।

३. यही सच है --

श्रीमती मन्नू भण्डारी के तृतीय कहानी संग्रह` यही सच है ` में आठ कहानियाँ संकलित है।

` यही सच है ` इस कहानी के आधार पर इस कहानी संग्रह का नामकरण हुआ है। इस कहानी संग्रह में मन्नू जी ने कहानियों में मनोविश्लेषणात्मक चित्रण सहजतासे एवं सुक्ष्मतासे किया है।` क्षय ` की ` कुंती`,` तीसरा आदमी` का ` सतीश` यही सच है` की` दीपा` इन पात्रों का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण अधिक सुन्दर बन पड़ा है।

४. एक प्लेट सैलाब --

मन्नू जी का यह चौथा कहानी संग्रह सन १९६८ में प्रकाशित हुआ। इस कहानी संग्रह में कुल ९ कहानियाँ संगृहीत है।

इस कहानी संग्रह की` एक प्लेट सैलाब` ,` कमरे कमरा और कमरे` तथा ` बंद दराजों का साथ` आदि कहानियाँ पाठकों के मन पर सहजतासे अपना प्रभाव छोड़ती है।` नई नौकरी`,` एक बार और`,` संस्था के पार`,` बाहों का घेरा`, ` उँचाई` आदि कहानियों में नारी मनोभावों का सूक्ष्म चित्रण अधिक हुआ है।

५. त्रिशंकु --

मन्नू जी का यह पाँचवा कहानी संग्रह सन १९७८ में प्रकाशित हुआ । इस कहानी संग्रह में ९ कहानियाँ संकलित है ।

मन्नू जी का यह कहानी संग्रह कहानी कला की दृष्टिसे अत्यंत सुन्दर बन पडा है । इसी कारण लेखिका को अत्यंत गौरव का स्थान प्राप्त हुआ है । ` त्रिशंकु ` इस कहानी के आधार पर इस कहानी संग्रह का नामकरण हुआ है । इस कहानी संग्रह की अन्य कहानियाँ ` आते जाते यायावर `, ` दरार भरने की दरार `, ` स्त्री - सुबोधिनी `, ` रेत की दीवार `, ` तीसरा हिस्सा `, ` आलमाँव `, ` एसाने आकाश `, नाइ,`` शायद ` ये कहानियाँ सफल सिद्ध हुई हैं ।

उपन्यासकार मन्नू भण्डारी --

कहानियों के बाद मन्नू का विशेष महत्व एक कुशल एवं सजीव,सामायिक जीवन के जीवन यथार्थ पर आधारित उपन्यास लेखिका के रूप में निरन्तर सामने आ रहा है । इनकी उपन्यास-लेखन-प्रतिभा के प्रथम दर्शन हुए थे,` एक इंच मुस्कान ` नामक उपन्यास में, जो इन्होंने अपने पति श्री राजेन्द्र यादव के साथ मिलकर लिखा था । इस के बाद इनके ` आप का बंटी ` नामक उपन्यास को भी विशेष मान,महत्व और ख्याति प्राप्त हुई । इनका एक और उपन्यास ` स्वामी ` जीस पर ` स्वामी ` नामक फिल्म बनी । ` कलवा ` इनका एक प्रमुख उपन्यास है, जिसमें वर्णित यथार्थ वस्तुत: पाठक के मन को छू लेता है । ` महाभोज ` इनका अन्य प्रमुख एवं बहुचर्चित उपन्यास है, जिसमें आज की राजनीतिक विडम्बनाओं का अत्यन्त कुशल एवं निर्भीक चित्रण किया गया है ।

मन्नू मण्डारी के प्रकाशित उपन्यास --

उपन्यास		प्रथम संस्करण
१. एक इंच मुस्कान (सह्योगी उपन्यास)	-	सन १९६१ ई.
२. आपका बंटी	-	सन १९७१ ई.
३.स्वामी	-	सन १९८२ ई.
४. महाभोज	-	सन १९७६ ई.
५. कलवा (बाल उपन्यास)	-	सन १९७१ ई.

(१) एक इंच मुस्कान --

यह उपन्यास सर्वप्रथम ` ज्ञानोदय ` मासिक में जनवरी १९६१ से दिसम्बर १९६१ तक धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ और तदुपरांत इसका पुस्तकाकार रूप में प्रकाशन हुआ । यद्यपि इस उपन्यास की कथावस्तु स्वतंत्र रूप से श्रीमती मन्नू मण्डारी की ही थी परंतुप्रयोग के उद्देश्य से श्री राजेन्द्र यादव और मन्नू मण्डारी ने सम्मिलित रूप से ` एक इंच मुस्कान ` उपन्यास की रचना की तथा इस उपन्यास का पुरुष पात्र ` अमर ` को श्री यादवजी ने चित्रित किया है तो मन्नूजी ने ` रंजना ` और ` अमला ` इन स्त्री पात्रों को चित्रित किया है । अमर नवोदित लेखक है । वह अपनी पत्नी रंजना से तथा मित्र अमला से संबंध बनाये रखता है । अत: वह एकाकी जीवन जी ने के लिए विवश हो जाता है ।

(२) आपका बंटी --

सन १९७१ में प्रकाशित ` आपका बंटी ` श्रीमती मन्नू मण्डारी का सर्व प्रथम स्वतंत्र उपन्यास है । ` बंटी ` को केन्द्र में रखकर इस उपन्यास की रचना की है । शकुन उच्च शिक्षित और कामकाजी नारी है । एक कॉलेज की प्रिंसिपल है । उसका पति अजय दूसरे शहर में रहता है । शिक्षा के प्रभाव से शकुन में एक स्वतंत्र व्यक्तित्व निर्माण होता है । जिसकी टकराहट पारंपारिक दृष्टि से सोचने-समझने वाले उसके पति के व्यक्तित्व के साथ होती है । दोनों के दाम्पत्य - जीवन में एक ऐसी दरार

आ जाती है जिसे मिटाने में उनकी संतान बंटी भी सफल सिद्ध नहीं होती। पति अजय शकुन को तलाक देने से पहले ही दूसरी स्त्री के साथ विवाह कर लेता है जिसके कारण शकुन और अजय का सम्बन्ध विच्छेद अनिवार्य हो जाता है। इस सम्बन्ध - विच्छेद के बाद बंटी अपनी माँ के साथ रहता है परंतु जब शकुन भी अपना दूसरा ब्याह डॉ.जोशी के साथ रचती है तब बंटी का भविष्य गड़बड़ा जाता है। अत: उसे अजय के घर रहने का अवसर दिया जाता है,परंतु वहाँ पर भी वह अपनी सौतेली माता के साथ रहने के लिए तैयार नहीं है,परिणामत: उसे होस्टेल में रहने के लिए भेजा जाता है।

(३) महाभोज --

' अलगाव ' कहानी का एक सफल रूपांतरण ' महाभोज ' उपन्यास है। स्वाधीनता के बाद के भारत का एक देहात,उस देहात तक पहुँची हुई दलगत राजनीति, चुनावों के लिए अपनाये जाने वाले हथकंडे,पुलिस की अपने ही लाभ पर केन्द्रित दृष्टि, बुध्दिजीवियों की तटस्थता और पत्रकारों की अवसरवादिता ये सारे तत्व इस उपन्यास की कथावस्तु में मुखर होकर उभरे हैं। दा साहब मुख्यमंत्री है और सुकुल बाबू विरोधी पक्ष के नेता,जोरावर राजनीतिक सुरक्षा में पलनेवाला गुंडा और हत्यारा है। सक्सेना और सिन्हा पुलिस अधिकारी हैं, । दत्ताबाबू ' मशाल ' नामक अखबार के संपादक। महेश शर्मा बुध्दिजीवी है जो इस बात की खोज करने देहात पहुँचता है कि, ' क्लास स्ट्रगल और कास्ट स्ट्रगल ' क्या होता है। आम चुनाव से कुछ ही दिन पहले एक देहात में बिसेसर नामक युवक की हत्या हो जाती है। बिसू की हत्या को पहले आत्महत्या घोषित किया जाता है और बाद उसकी हत्या के जुर्म में बेगुनाह बिन्दा को गिरफ्तार कर लिया जाता है। निरपराध होते हुये भी बिन्दा जेल में सूखी रोटीया खाता है और भयंकर अपराधी होते हुये भी गुंडे और राजनीतिक नेता ' महाभोज ' उड़ाते है। एक हत्या का आत्महत्या के रूप में घोषित होना और अंत में किसी बेगुनाह को गुनहगार ठहराते हुए जेल में बंद करना जिस सफेद झूठ का प्रमाण है, उस सफेद झूठ को सत्य सिद्ध करने वाली काली - कलूटी राजनीति के घिनौने करतब इस उपन्यास में अंकित हुये हैं।

(४) स्वामी --

बंगला के विख्यात कहानीकार शरत्चंद्र की कहानी `स्वामी` को मन्नू जी ने उपन्यास का रूप दे दिया । मीनी,उसका प्रेमी नरेन्द्र और पति घनश्याम के बीच की कहानी इस उपन्यास की कथावस्तु बनी है । घटनाओं की प्रचुरता नहीं लेकिन सूक्ष्म भावनाओं के उदेलनो की भरमार है । मीनी का सहपाठी नरेन्द्र है । वह उसका पडोसी भी है । दोनों के बीच में अनुराग की सहज भावना है । लेकिन नियति को यह स्वीकार्य नहीं होता । मीनी अपने मामा के तय किये हुए रिश्ते के अनुसार घनश्याम के साथ वैवाहिक बंधन में बँध जाती है । परिणामत: मीनी के अत:करण में अपने पति के प्रति किसी तरह की अनुराग भावना नहीं उपजती । उसकी जगह उसके मन में अपने पति के प्रति एक क्षीण-सा ही सही सहानुभूति भाव जागता है । वह सहानुभूति-भाव घनश्याम के उस भलेपन की अनजाने में ही सही स्वीकृति है जो मीनी को अपने पति के साथ ही रहने का अंतिम निर्णय लेने पर बाध्य करती है । मीनी और घनश्याम के दाम्पत्य जीवन में जो एक तरह का अलगाव - सा अनुभव होता है वह इन दोनों में से किसी एक के भी दोष अथवा अपराध के कारण उत्पन्न नहीं हुआ । नरेन्द्र के प्रति मीनी का सहज आकर्षण कुछ समय के लिए उसे अपने वैवाहिक बंधन को त्यागकर नरेन्द्र के साथ रहने के लिए प्रेरित करता है । परंतु अंतत: उसके अपने पति की भलमनसाहत की शक्ति जीत लेती है और वह अपनी उस प्रेरणा को त्याग देती है ।

नाटककार मन्नू भण्डारी --

मन्नू भंडारी की साहित्यिक प्रतिभा का यह तीसरा अभी तक का परिचित स्वरूप है । `बिना दीवारों का घर` नामक इनका नाटक साहित्य - क्षेत्र में चर्चा का विषय तो बना ही रंगमंच पर भी सफलता के साथ अभिनित किया गया । इनके उपन्यास `महाभोज` तथा कुछ कहानियों के नाट्य रूपांतर भी सफलता के साथ अभिनीत हो चुके हैं ।

मन्नू भण्डारी के प्रकाशित नाटक --

	नाटक		प्रथम संस्करण
१.	बिना दीवारों का घर	-	सन १९६६ ई.
२.	महाभोज	-	सन १९८३ ई.

(१) बिना दीवारों का घर --

यह मन्नू जी की मौलिक नाटयरचना है। शोभा और अजित तथा मीना और जयंत इन दो वैवाहिक जोडों की यह कहानी है। दाम्पत्य जीवन में ये असफल हुये है। जयंत अपनी स्टेनो के साथ अनैतिक सम्बन्ध रखता है। जिसके कारण जयंत-मीना के दाम्पत्य जीवन में दरार उत्पन्न होती है। शोभा नौकरी करती है इसी वजह से शोभा अजित के दाम्पत्य जीवन में दरार उत्पन्न होती है। दाम्पत्य जीवन को असफल बनानेवाली परिस्थिति पर प्रकाश डाला गया है।

(२) महाभोज (नाटय-रूपांतर)

मन्नू जी ने 'महाभोज' उपन्यास को नाट्य रूप में परिवर्तित कर दिया है और उसके सफल प्रयोग हो चुके हैं। इस नाटक के कथोपकथन एवं चरित्र चित्रण सुन्दर बन पडे है। इस नाटक में कुछ छोटे-मोटे हेर-फेर किये गये है फिर भी अत्यंत सुन्दर और सफल रचना बनी है।

किशोरोपयोगी साहित्य --

मन्नू भण्डारी जी ने कहानी, उपन्यास, नाटक के साथ ही कुछ किशोरोपयोगी भी साहित्य लीखा है।

(१)	आसों देखा झूठ (बाल कहानियाँ)	सन १९७६ ई.
(२)	कलवा (बाल उपन्यास)	सन १९७९ ई.

(१) आँखों देखा झूठ (बाल कहानियाँ) --

श्रीमती मन्नू मण्डारी का किशोरोपयोगी कहानी संग्रह 'आखों देखा झूठ' सन १९७६ में प्रकाशित हुआ । इस कहानी संग्रह में 'आखों देखा झूठ', 'दुर्भाग्य की हार', 'वशीकरण', 'बढता हुआ यश', 'संकट की सूझ', 'आवाजें', 'नहले पे दहला', ये सात कहानियाँ है ।

(२) कलवा --

मन्नू जी का 'कलवा' यह किशोरोपयोगी उपन्यास सन १९७१ ई.में प्रकाशित हुआ । यह उपन्यास बाल उपन्यास होते हुये भी बडों को भी अच्छी शिक्षा इससे मिलती है । चमार का बेटा 'कलवा' मेहनती,ईमानदार जनता का प्रतिनिधित्व करता है ।

निष्कर्ष --

श्रीमती मन्नू भंडारी जी ने अपने साहित्य जगत में पाँच कहानी संग्रह,पाँच उपन्यास तथा दो नाटयकृतियाँ साथ ही किशोरोपयोगी साहित्य की रचना की है । फिर भी वह मूलत: कहानी लेखिका के रूप में ही जानी जाती है । उनका साहित्य लोकप्रिय हुआ है । मन्नू जी की भाषा सीधी एवं सरल होने के कारण उनकी कहानियाँ पाठक के अंतर्मन को छूती है । उन्होंने अपनी कहानियों में नारी मन की अनुभूतियों को अभिव्यक्ति दी है ।

मन्नू जी को लेखन संस्कार विरासत में मिला है । उनके व्यक्तित्व निर्माण में माता-पिता का योगदान रहा । साहित्यकार के रूप में उन्हें पुरस्कार तथा सम्मान दिया गया है । उनका साहित्य अनेक भाषाओं में अनुवादित हुआ । उनके उपन्यास और कहानियों पर फिल्में भी बनी है । यही उनकी लोकप्रियताका प्रमाण है ।

मन्नू जी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं और उन्होंने कहानी,उपन्यास एवं नाटक आदि विविध रूपों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है ।

उपन्यास, नाटक और कहानी इन तीन विधाओं को ग्रहण करनेवाली मन्नू जी ने अपने साहित्य में यथार्थ को अभिव्यक्त किया है। जिसके कारण उनकी रचनाएँ सफल और लोकप्रिय हुई हैं। जिसके परिणामस्वरूप हिन्दी साहित्य में मन्नू जी अपना विशेष नाम, स्थान और महत्व अर्जित कर सकीं।